अध्याय–2

# साहित्य का पुनरावलोकन एवं समीक्षाएं

;त्मअपमू व िस्पजमतंजनतम –ैपहदपपिबंदबमद्ध

''साहित्य का पुनरावलोकन, वैज्ञानिक पद्धति का एक महत्वपूर्ण सोपान हुआ करता है, इसके अभाव में किया गया अध्ययन अन्धे के तीर के तुल्य होता है।''

*– महेष्वरी पी.के., सामाजिक अनुसन्धान एवं सर्वेक्षण के मूल तत्व, रिसर्च पब्लिकेसन्स, जयपुर (राज.), 1997, पृ.65*

अनुसंधान कार्य चाहे विषुद्ध विज्ञान विशयों से सम्बन्धित हो अथवा सामाजिक विज्ञानों की समस्याओं सम्बन्धी; अनुसन्धान के कुछ प्रमुख सोपान (चरण) होते हैं; उन्हीं सोपानों में से एक प्रमुख सोपान **''सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन तथा समीक्षाएं''** होता है। इस सोपान के अन्तर्गत अनुसन्धान समस्या से सम्बन्धित पूर्व सैद्धान्तिक तथा ब्यावहारिक अध्ययनों की समीक्षाएं की जाती हैं; चाहे पूर्व में किए गए अध्ययन सैद्धान्तिक हों अथवा आनुभविक सर्वेक्षणात्मक। ऐसा करने से अनुसन्धानकर्ता को कई लाभ होते हैं; यथाः (1) अध्ययनकर्ता को यह ज्ञान एवं अनुभव हो जाता है कि प्रस्तुत षोध समस्या से सम्बन्धित किन–किन षोध प्रकरणों/पहलुओं पर पूर्व में अध्ययन सम्पादित किए जा चुके हैं; एवं उनके निश्कर्श क्या–क्या रहे हैं? (2) पूर्व विद्वज्जनों द्वारा किए गए अनुसंधान कार्यों में कौन–कौन सी पद्धतियॉ एवं प्रविधियॉ प्रयोग में लायी गयी हैं (3) किस पद्धति तथा प्रविधि से अध्ययन करने पर कौन–कौन सी समस्याएं अनुसंधानकर्ता के समक्ष जनित हुई? (4) सन्देहात्मक एवं भ्रमात्मक स्थितियों में अनुसंधान कार्य करना कैसे सम्भव हो सका? (5) अध्ययनकर्ता में अध्ययन विशय से सम्बन्धित सामान्य ज्ञान, विवेक तथा सूक्ष्म अन्तर्दृश्टि विकसित हो जाती है जिससे वह षोध प्रष्नों अथवा नवीन प्राक्कल्पनाओं का निर्माण करने में सरलता एवं सफलता का अनुभव करता है; तथा (6) अपने अनुसन्धान कार्य हेतु उसे सामान्य मार्ग निर्देषन तथा एक स्पश्ट दिषा स्वतः प्राप्त हो जाती है जिससे वह–

(क) अध्ययनकर्ता; अनुसन्धान कार्य को फिर से दोहराने की गलती नहीं करता; क्योंकि साहित्य का पुनरावलोकन कर लेने से उसमें सामान्य ज्ञान तथा षोध समस्या से सम्बन्धित अन्तर्दृश्टि विकसित तथा स्पश्टतर दिषा बोध हो जाता है।

(ख) सुगमता से वह अपने गन्तब्य (निश्कर्श प्राप्त करने) तक पहुॅचने में सफल हो जाता है।

(ग) अध्ययनकर्ता को उचित अध्ययन पद्धतियों तथा प्रविधियों का बोध उसे स्वतः ही हो जाता है।

(घ) षोध परिकल्पना निर्माण में आसानी हो जाती है।

इस सन्दर्भ में कतिपय प्रतिनिधि विद्वानों के अभिमत (विचार) अग्रॉंकित हैं–

- **बेसिन एफ.एच.[1] (1962:40) के अनुसार** ''साहित्य का पुनरावलोकन'' प्रत्येक अनुसन्धान योजना का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सोपान हुआ करता है क्योंकि आरम्भ में प्रत्येक अनुसन्धान कार्य, अनुसन्धानकर्ता को जटिल तथा अस्पश्ट प्रतीत होता है। सम्बन्धित साहित्यों के अध्ययनों से षोध अध्ययन की जटिलता एवं अस्पश्टता दोनों ही समस्यायें प्रायः समाप्त हो जाती हैं। इसका कारण यह है कि साहित्य के पुनरावलोकन से अध्ययनकर्ता को यह स्पश्ट हो जाता है कि षोध अध्ययन के लिए विष्वसनीय, आवष्यक व वॉंच्छित अध्ययन सामग्री, कहॉं से तथा कैसे प्राप्त हो सकती है? अध्ययनकर्ता को साहित्य के पुनरावलोकन से होने वाले अन्य लाभ इस प्रकार हैं–
  (1) अध्ययनकर्ता को षोध अध्ययन के सन्दर्भ में सामान्य ज्ञान विकसित हो जाता है जिससे परिकल्पनाओं के निर्माण में सहायता मिली है।
  (2) अध्ययनकर्ता को यह स्पश्ट हो जाता है कि अध्ययन किस अध्ययन–पद्धति तथा प्रविधियों से करना सरल, सुगम तथा श्रेयश्कर होगा अर्थात् षोध पद्धति व प्रविधियों का ज्ञान हो जाता है।
  (3) अध्ययनकर्ता को अध्ययन के सम्बन्ध में भ्रमात्मक तथा सन्देहात्मक स्थितियॉं सुस्पश्ट हो जाती हैं, अतः अनुसन्धान कार्य के सम्बन्ध में अध्ययन करने में सरलता हो जाती है क्योंकि अध्ययनकर्ता को अनुसन्धान हेतु दिषा ज्ञान स्पश्ट हो जाता है।
- **बोर्ग जी.पी.[2] (1963:48) के षब्दों में–** सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन; किसी भी अनुसन्धानकर्ता को इस योग्य बना देता है कि वह पहले किए हुए अनुसन्धान कार्यों का पता लगा सके, और उनका अध्ययन करके उनकी समीक्षा कर सके। ऐसा करने से अध्ययनकर्ता अपने अनुसन्धान कार्य की विधियों तथा उपकरण इत्यादि का उचित चयन कर, अनुसन्धान की उचित व स्पश्ट दिषा प्राप्त कर लेता है एवं गन्तब्य तक पहुॅंचने में सफल हो जाता है।

- **सिन्हा पी.आर.[3] (अनुसन्धान के मूल तत्व; 1991:102) ने लिखा है कि–** ''सामान्यतः मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं– (1) ज्ञान को एकत्रित करना (2) ज्ञान को एक दूसरे तक पहुंचाना (3) ज्ञान में अतिरिक्त वृद्धि करना। ये तीनों ही बातें अनुसन्धानों में विषेश रूप से महत्वपूर्ण होती हैं, जो कि वास्तविकता के निकट आने के लिए प्राप्त योगदान एवं प्रत्येक क्षेत्र में मानव द्वारा किए गए सतत् प्रयासों की सफलता को सम्भव बनाता है। इस प्रकार साहित्य की समीक्षा करना, अनुसन्धान उपक्रम का यह एक वैज्ञानिक एवं महत्वपूर्ण चरण है क्योंकि वर्तमान के गर्त में अतीत छिपा है और वर्तमान का अस्तित्व अतीत के कारण ही है। अर्थात् मनुश्य अतीत में संचारित एवं आलेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है।
- **सिंह एण्ड सिंह[4] (1991:30) के अनुसार** किसी भी षोध समस्या का चयन कर लेने के पष्चात, यह आवष्यक ही नहीं; अपितु अनिवार्य सोपान होता है कि अनुसन्धान विशय से सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन किया जाय क्योंकि साहित्य का पुनरावलोकन करने से–
  (1) अध्ययनकर्ता में अध्ययन समस्या के बारे में स्वतः एक अन्तर्दृश्टि, ज्ञान बोध तथा सामान्य ज्ञान विकसित हो जाता है।
  (2) अनुसन्धान कार्य हेतु षोधकर्ता को उपयुक्त अध्ययन पद्धतियों तथा प्रविधियों का समुचित ज्ञान हो जाता है।
  (3) अध्ययनकर्ता उचित परिकल्पनाओं अथवा अध्ययन समस्या से सम्बन्धित षोध प्रष्नों का निर्माण करने में सफल हो जाता है।
  (4) अध्ययनकर्ता द्वारा एक ही षोध कार्य को फिर से दोहराने की गलती नहीं हो पाती और अध्ययन समस्या से सम्बन्धित उन पहलुओं (पक्षों) पर जिन पर पूर्व के अन्य षोध अध्येताओं ने ध्यान नहीं दिया है; अथवा ध्यान देने से जो पक्ष छूट गए; अनुसंधित्सु को उन समस्त पक्षों/आयामों का भी ज्ञान हो जाता है इसलिए षोध कार्य सुगमता व सहजता से पूरा हो जाता है।
- **स्टाउफर सेम्युअल[5] (1962:73) के षब्दों में–**वस्तुतः सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन एवं उनकी समीक्षा के अभाव में अनुसन्धान कार्य आरम्भ करना 'अन्धे के तीर' के तुल्य होता है। 'रिब्यू' के अभाव में अनुसन्धान कार्य एक कदम भी प्रगति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता; जब तक कि अनुसन्धानकर्ता को इस तथ्य का ज्ञान नहीं है कि इस क्षेत्र में

किन–किन आयामों पर कितना कार्य हो चुका है? कौन–कौन से स्रोत प्राप्त हैं? तब तक भली भांति वह न तो समस्या का चयन ही कर सकता है, और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर, षोधकार्य को गति प्रदान कर सकता है। इसका मौलिक कारण यह है कि अनुसन्धान कार्य का मुख्य उद्देष्य किसी समस्या विषेश पर नवीन दृश्टिकोण से विचार करना या उसमें नवीनता लाना अथवा समस्या की नवीन ढंग से तर्कपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत करना होता है। किसी अनुसंधान कार्य के लिए विशय चयन कर लेने के उपरान्त; अनुसंधानकर्ता षोधकार्य आरम्भ करने से पूर्व षोध योजना का चिन्तन करके षोध के लिए प्रमुख सोपानों (चरणों) को भी निर्धारित करता है, उन्हीं सोपानों में से अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य सोपान ''सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन'' होता है। साहित्य का पुनरावलोकन तथा सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा कर लेने से–

(क) अध्ययनकर्ता को अध्ययन समस्या के सम्बन्ध में एक अन्तर्दृश्टि तथा षोध अध्ययन के बारे में सामान्य ज्ञान व जानकारी हो जाती है।

(ख) अनुसंधान कार्य में उपयोगी सिद्ध होने वाली वैज्ञानिक पद्धतियों तथा प्रविधियों के सम्बन्ध में आवष्यक जानकारी उसे स्वतः हो ही जाती है।

(ग) अध्ययन के मुख्य तथा गौण/पूरक उद्देष्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न परिकल्पनाओं के निर्माण में सहायता होती है।

(घ) षोधकर्ता द्वारा एक ही अनुसंधान कार्य को फिर से दोहराने की भूल नहीं होती तथा अध्ययन समस्या से सम्बन्धित उन समस्त पहलुओं पर जिन पर पूर्व के अनुसंधानकर्ताओं ने ध्यान नहीं दिया है, उन छूटे हुए पहलुओं पर दृश्टिपात हो जाता है।

इन सभी उपयोगी विषेशताओं को ध्यान में रखकर अनुसंधित्सु ने भी अपनी अनुसंधान समस्या से सम्बन्धित उपलब्ध साहित्य का पुनरावलोकन एवं तत्सम्बन्धित समीक्षा करने का प्रयास किया है, जो निम्नांकित है– यों तो सेवानिवृत्त महिलाओं की स्थिति, सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं, समस्याओं, पुनर्वास एवं कल्याण से सम्बन्धित भूमिकाओं/आयामों पर काफी कुछ अध्ययन सम्पादित हो चुके हैं परन्तु प्रस्तुत षोध समस्या पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर (पूर्ववर्ती आगरा विष्वविद्यालय) आगरा में अभी तक कोई अनुसंधान कार्य नहीं हुआ है। साहित्य की समीक्षा की दृश्टि से कुछ प्रमुख व उल्लेखनीय अध्ययन एवं तत्सम्बन्धित निश्कर्श निम्नवत है–

- **सिंह बी0एस[6] (वृद्धावस्था का निर्धारण) ने लिखा है कि** यद्यपि भारत में वृद्धों तथा सेवानिवृत्तों के सम्बन्ध में अनुसन्धानकार्य अत्यन्त ही अल्प हुए हैं। इनकी उम्र–निर्धारण के सम्बन्ध में विद्वान भी एक मत नहीं हैं; कोई विद्वान इस अवस्था को $55^{+}$ वर्श से मानता है, तो कुछ विद्वान $60^{+}$ आयुवर्ग (वर्श) से; तो कुछ रोजगार विरत होने की स्थितियों से जोड़ते हैं। लेकिन तथ्यात्मक रूप में जनगणना विभाग 1991, भारतीय सन्दर्भ में वृद्धावस्था $60^{+}$ आयु वर्ग तथा इससे अधिक उम्र को वृद्ध मानता है। निम्न तालिका भारत में इस अवस्था के व्यक्तियों के सम्बन्ध में संख्या, प्रतिषतता तथा दषक वृद्धि (सन् 1951 से सन् 2000 तक) वृद्धजनों की संख्या, जनसंख्या के साथ प्रतिषतता होने वाली दषक वृद्धि पर पर संक्षिप्त प्रकाष डालती है।

***च्व्च्न्स्।ज्प्व्छ व्थ् च्म्त्ैव्छै 60 प्छ प्छक्प्।***

| *च्वचनसंजपवद व ि चमतेवदे 60 ;प्द प्दकपंद्ध पद उपससपवदे* | | | | |
|---|---|---|---|---|
| *ल्मंत* | *छवण व ि च्मतेवदे* | *ः व ि जीम च्वचनसंजपवद* | *ज्वजंस* | *क्मबंकंस प्दबतमेंम पद च्वचनसंजपवद 60 ळतवूजी.तंजम ;ःद्ध* |
| 1951 | 20ण190 | 5ण66 | .. | .. |
| 1961 | 24ण712 | 5ण63 | 4ण522 | 22ण40 |
| 1971 | 32ण700 | 5ण97 | 7ण988 | 32ण31 |
| 1981 | 42ण172;ंद्ध' | 6ण49 | 10ण472 | 31ण02 |
| 1991 | 54ण685;इद्ध' | 6ण54 | 11ण513 | 26ण67 |
| 2000 | 75ण696;इद्ध' | 7ण63 | 29ण011 | 38ण42 |

' ;ंद्ध म्गबसनकपदह ।ेंउ

' ;इद्ध च्तवरमबजमक

- **भारतीय राश्ट्रीय निदर्षन सर्वेक्षण संगठन[7] ;छैैैण्व्ण्द्ध के 42वें चक्र– 1989 के ऑकडों के अनुसार** ग्रामीण नगरीय भारत के वृद्धजनों के सन्दर्भ में लिंग सापेक्ष तथ्य पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाष डालती है–

***श्रव्ैै ।ठव्न्ज् ज्भ्म् ।ळम्क् च्म्त्ैव्छै व्थ् प्छक्प्। ;त्न्त्।स्ध्न्त्ठ।छद्ध***

| *श्रव्ैै ।ठव्न्ज् ज्भ्म् ।ळम्क् ;ड।स्म् – थ्म्ड।स्म्द्ध* | | | |
|---|---|---|---|
| *ैण्छवण* | *ब्संेपपिबंजपवद व ि।हमक च्मतेवदे* | *त्नतंस* | *न्तइंद* |
| 1ण | च्मतेवदे पद सीं | 394ण51 | 87ण35 |
| 2ण | ैमग त्ंजपव ;छवण व िथ्मउंसमे चमत 1000 डंसमेद्ध | 675 | 697 |
| 3ण | म्बवदवउपबंससल प्दकमचमदकमदज | 34ण02ः | 28ण94ः |
| 4ण | ळंपदनिससल मउचसवलमक | 40ण55ः | 26ण76ः |
| 5ण | स्पअपदह ंसवदम | 7ण99ः | 5ण94ः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 6ण | ॅपससपदह जव ीपजि जव जीम ीवउम वित जीम ंहमक | 19ण10: | 17ण60: |
| 7ण | भ्ंअपदह बीतवदपब कपेमेंम | 45ण00: | 44ण80: |
| 8ण | चैलेपबंससल प्उउवइपसम | 5ण40: | 5ण50: |

- **पचौरी जे0पी[8] (1992) के अनुसार–** भारत में वृद्धावस्था एक प्रमुख समस्या के रूप में उभर कर सामने आ रही है, जो एक स्वाभाविक जैविकीय प्रक्रिया है, जिसमें मनुष्य में शारीरिक लक्षण उभरने लगते हैं; जो मानव के जीवन चक्र की उत्तरार्द्ध की गति होती है, जिसे 'बुढापा' कहते हैं; यह अवस्था एक वास्तविकता एवं अनिवार्यता है, जो अक्षमता की दषा होती है। इसमें व्यक्ति स्वयं को उपेक्षित अनुभव करता है। इस प्रकार वृद्धावस्था एक मानवीय समस्या है। इसके समाधान के लिए मानवीय दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए। क्योंकि इस अवस्था की विभिन्न समस्यायें होती हैं; जो प्रायः शारीरिक, मानसिक, मनोसामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक एवं समायोजन सम्बन्धी होती हैं।
- **सिंह एस0डी[9] (बृद्धजन– साधारण एवं सेवानिवृत्तः एक विष्लेशण, 1995:7) के अनुसार** भारत में वृद्धों की समस्या पर विचार करने के लिए सम्पूर्ण वृद्धों को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है– प्रथमः वे बृद्ध जो सरकारी एवं गैर सरकारी सेवाओं से निवृत्त हैं, द्वितीयः वे जो जीवनभर कार्य करते हैं किन्तु कभी सेवानिवृत्त नहीं होते। वृद्धावस्था में सेवानिवृत्त व्यक्तियों को, अन्य व्यक्तियों की तुलना में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वे उस समय अपने को अधिक परेषान तथा असुरक्षित महसूस करते हैं जब उनकी आर्थिक सहायता करने वाला कोई न हो। निःसन्तान, अविवाहित एवं परित्यक्त व जीर्णषीर्ण, शारीरिक अक्षमता तथा रोग ग्रस्तता के कारण भी अपने को असहाय पाते हैं। सेवानिवृत्त बृद्धों की एक प्रमुख समस्या उनके खाली समय के उपयोग की भी है। सुखी जीवन के लिए जीवन की अनवरतता तथा समुदाय के साथ अन्तःक्रिया दोनों अनिवार्य हैं। इसलिए वृद्धों की सक्रियता तथा उपयोगिता की भावना को बनाए रखने के लिए समाज को उनकी दक्षता, बौद्धिकता तथा सम्पूर्ण जीवन के ज्ञान भण्डार से लाभ उठाने के लिए प्रयास किये जाने चाहिए।
- **सिलावट सुधा एस[10] (1995) के अनुसार** वृद्धावस्था को उम्र, शारीरिक स्थिति तथा मानसिक दषायें; कारक निर्धारित करते हैं। इस अवस्था में व्यक्ति में उत्सुकता में कमी, निराषा, आलस्य, अक्षमता, चिडचिडापन, एकाग्रप्रियता, सामंजस्य का अभाव, उपदेष देना आदि प्रमुख हैं। जो कि शारीरिक तथा मानसिक लक्षण हैं। ऐसे व्यक्ति आत्म केन्द्रित,

संवेदनषील, निराषावादी, दुखी, विषाद्मय एवं भविष्य के प्रति चिन्तित रहते हैं। इसलिए अपना जीवन व्यवस्थित तथा सन्तुलित नहीं कर पाते हैं। इनकी प्रमुख समस्याओं में, समय व्यतीत करने तथा मनोरंजन की समस्या, आवास की समस्या, सामाजिक–सामंजस्य, आर्थिक तथा पूॅजी की देखभाल समस्यायें प्रमुख होती हैं।

- **सुनील गोयल[11] (1997) के अनुसार** वृद्धावस्था कोई बीमारी नहीं है बल्कि (1) मानव के जीवनचक्र की अन्तिमदषा, (2) स्वाभाविक जैविकीय प्रक्रिया तथा (3) प्रत्येक मानव के लिए एक अनिवार्यता है; इसमें अन्योन्याश्रित तथा भांति–भांति की समस्यायें–शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक तथा आर्थिक जनित होती हैं। इनके जीवन के अनुभवों का लाभ लेने के लिए इन्हें समाज तथा परिवार में एकीकृत तथा सामंजस्य करने के प्रयास किये जाने चाहिए ताकि वृद्धजनों की समस्याओं का समाधान सम्भव हो सके।
- **रानी वन्दना[12] (1999)** ने अपने 50–50 ग्रामीण–नगरीय वरिश्ठ नागरिक (सीनियर सिटीजन्स) न्यादर्षों के आनुभविक अध्ययन में पाया है कि–
  (1) ग्रामीण क्षेत्रों एवं नगरीय क्षेत्रों में वृद्धों के परिवारों के स्वरूपों की संरचनाओं में भिन्नता स्पश्ट दिखायी देती है।
  (2) ग्रामीण अंचलों में नगरीय की तुलना में वृद्धजनों को कुछ अवसरों पर अपेक्षाकृत अधिक सम्मान व आदर दिया जाता है साथ ही कार्यों के सम्बन्ध में उनसे पूछकर सलाह मषबिरा भी लिया जाता है किन्तु किए गए अध्ययन में मात्र 48 प्रतिषत परिवारों में ऐसा पाया गया है।
  (3) परम्परागत भारतीय संयुक्त परिवार व्यवस्था के अन्तर्गत परिवार की सत्ता; परिवार के वयोबृद्ध (40 प्रतिषत) के परिवारों में ही पायी गयी है लेकिन वृद्धजनों की स्थिति पर भौतिकतावादी एवं व्यक्तिवादी मूल्यों के फलस्वरूप स्पश्ट परिवर्तन दृश्टिगत हुए हैं।
  (4) परिवारों की सत्ता वृद्धों के हाथ से युवाओं; तो कुछ परिवारों में युवा महिलाओं के हाथ में, जो परिवार की उत्पादन प्रणाली में सक्रिय भूमिका निभाते हैं; के हाथों में हस्तान्तरित हो रही है।
  (5) मात्र 17.5 प्रतिषत परिवारों में परिवार की समस्त सामाजिक–आर्थिक गतिविधियों पर वृद्ध कर्ता/मुखियाओं का प्रभाव निर्णायक पाया गया है। षेश 82.5 प्रतिषत परिवारों में परिवार के अन्य सदस्यों का वर्चस्व देखने में आया है।

(6) वृद्धजनों द्वारा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अन्तःक्रियाओं के सन्दर्भ में पाया गया कि वृद्धों की वृद्धावस्था के फलस्वरूप इनकी कमाऊ भूमिका में परिवर्तन हो जाने के कारण उनके परिवार के सदस्यों ने उनके साथ अपनी अन्तःक्रियाओं में परिवर्तन कर लिया है।

(7) अध्ययन के दौरान पारिवारिक गतिविधियों का गहन अध्ययन करने पर विदित हुआ है कि 67.60 प्रतिषत सर्वेक्षित परिवारों में वृद्धजनों का लगाव परिजनों से यथावत/पूर्ववत है जबकि 32.40 प्रतिषत परिवारों में यह परिजन सम्बन्धी लगाव पूर्ववत नहीं पाया गया है तथा पारिवारिक गतिविधियों में भी ये वृद्धजन कम रूचि लेते पाए गए हैं।

- **इन्स्टीट्यूट ऑफ सोसल वर्क, दिल्ली[13] (1977)** द्वारा नई दिल्ली के परिवारों में वृद्धजनों की स्थिति पर एक सर्वेक्षण दल द्वारा एक गहन तथा सूक्ष्मतः अध्ययन किया गया जिससे प्राप्त आनुभविक निश्कर्श निम्न प्रकार हैं–

(1) 37 प्रतिषत परिवारों में वृद्धजनों के प्रति परिजनों के दृश्टिकोण उपेक्षापूर्ण पाए गए हैं।

(2) सर्वेक्षित वृद्ध निदर्षितों में से 49.3 प्रतिषत वृद्धों की अपनी कोई निजी (वैयक्तिक) आय नहीं थी। इसलिए अपनी आवष्यकताओं के लिए वे परिजनों पर आश्रित पाए गए। ये समस्त वृद्धजन मन से दुखी तथा बोझिल पाए गए हैं।

(3) 42.5 प्रतिषत सर्वेक्षित वृद्धजन सेवानिवृत्त पेंषन प्राप्तकर्ता पाए गए जो अपनी–अपनी अनिवार्य आवष्यकताओं की पूर्ति स्वयं ही कर लेते हैं; इनका परिवार में महत्व तथा सम्मान भी अपेक्षाकृत अधिक पाया गया।

(4) अध्ययन में 36.5 प्रतिषत वृद्धजनों की दिनचर्या सामान्य पायी गयी। इन सूचनादाताओं ने बताया कि वे घर के कामकाजों में अपनी सामर्थ्य के अनुसार हाथ भी बंटाते हैं।

(5) पेंषनभोगी सूचनादाताओं ने यह स्पश्टतः स्वीकार किया कि पेंषन मिलने के लिए सप्ताह पूर्व से उनकी देखरेख व पूछ अच्छी की जाती है और पेंषन के पैसे परिजनों की आवष्यकताओं के लिए देते रहने तक उनकी खुषामद अच्छी की जाती है किन्तु तदोपरान्त उनके साथ अति उपेक्षापूर्ण तथा उदासीन व्यवहार किया जाता है। इससे वृद्धजन उपेक्षा की अनुभूति का अनुभव करते पाए गए हैं।

(6) वृद्धा निदर्षितों ने स्पश्ट तौर पर बताया कि वे नाती–पोते खिलाती रहती हैं अतः मन बहलाव होता रहता है; 70.67 प्रतिषत निदर्षितों ने बताया कि उनका जीवन नीरस है; परिजनों का व्यवहार उनके प्रति उदासीन व उपेक्षापूर्ण रहता है क्योंकि उनका कोई आय का स्त्रोत व साधन नहीं है, वे पूर्णतः परिजनों व बहू बेटों पर आश्रित हैं।

- **अग्रवाल दामोदर[14] (1999) ने लिखा है कि** अच्छा तो यही होगा कि सेवानिवृत्त लोग अपना अधिकांष समय दूरदर्षन पर विभिन्न कार्यक्रम तथा सीरियल देखकर मनोरंजन करके तनाव रहित जीवनयापन करें ताकि उन्हें यह अहसास न हो कि वे अब सेवानिवृत्त हैं, बेकार हैं, उनके सामने दिक्कतें हैं। सबसे गम्भीर चिन्ता तो उनकी मनोदषा सम्बन्धी होती है, इसलिए ऐसे क्षणों में उन्हें घरेलू अथवा समाज के कार्यों में व्यस्त रहना चाहिए। ऐसा न करने वाले सेवानिवृत्त उपेक्षित और अलग–थलग अनुभव करने लगते हैं जो नैराष्य के कारण कुण्ठाग्रस्त हो जाते हैं। आपने सुझाव दिया है कि उन्हें अकेलेपन से बचाइए, सदैव स्मरण कराते रहिए कि आपके अनुभवों की बहुत जरूरत है। यह मानकर चलिए कि सेवानिवृत्त हमेषा बोझ बने बैठे नहीं रहेंगे। उनकी गलतियों के लिए उन्हें कोसिए मत और न ही बात–बात पर उन पर झल्लाइए। सेवानिवृत्तों की दिक्कतें तभी दूर होंगी जब परिवार में उन्हें पूरे मान–सम्मान के साथ समायोजित करके चलेंगे।
- **भट्टाचार्य बी0एन[15] (1982) ने लिखा है कि** अब समय आ गया है कि हमारी सरकार को सेवानिवृत्तों (सीनियर सिटीजन्स) के कल्याण एवं देखभाल के लिए एक राश्ट्रीय योजना बनानी होगी क्योंकि– (1) सन् 1971 की जनगणना के अनुसार भारत में $60^{+}$ वर्श के 34 लाख पुरूश तथा 14 लाख महिलाएं ऐसी थीं जिनके पास 'पेंषन के अलावा' आमदनी का कोई स्त्रोत/साधन नहीं था; उन्हें परिवार तथा समाज से उपेक्षित करके कश्टप्रद अन्त के लिए छोड़ दिया था (2) विभिन्न वर्शों में भिन्न–भिन्न संस्थाओं द्वारा सर्वेक्षण कार्य कराये गए यथाः (क) सन् 1977 में समाज कार्य संस्थान दिल्ली द्वारा कराए गए अध्ययन के अनुसार 49.3 प्रतिषत वृद्धों की पेंषन के अतिरिक्त अपनी कोई आय नहीं थी (ख) सन् 1982 में समाज कार्य संस्थान मद्रास द्वारा कराए गए अध्ययन के अनुसार पेंषन के अतिरिक्त 51.8 प्रतिषत वृद्धों की आय का कोई स्त्रोत नहीं था (ग) सन् 1975 में लखनऊ विष्वविद्यालय, लखनऊ के समाजकार्य विभाग द्वारा किए गए अध्ययन से पता चला कि 51.9 प्रतिषत बुजुर्गों की स्वयं की कोई आय नहीं है सिवाय पेंषन के (घ) समाज कार्य

संस्थान, दिल्ली के सन् 1977 के आनुभविक अध्ययन से भी यह पता चलता है कि 50 प्रतिषत वृद्धों की तन्दुरूस्ती अच्छी है परन्तु वे लाभदायक कार्यों में संलग्न नहीं है। इससे स्पश्ट होता है कि सेवानिवृत्तों के लिए विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रम बनाने की परमावष्यकता है। भले ही उन्हें षासन पेंषन प्रदान करता है।

- **समाज कल्याण विभाग, केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड नई दिल्ली[16] (1982)** द्वारा प्रायोजित दो दिवसीय विचार गोश्ठी में वृद्धजनों, वरिश्ठ नागरिकों तथा सेवानिवृत्तों की समस्याओं के समाधान के सम्बन्ध में स्वैच्छिक संगठनों और सरकारी प्रयासों व भूमिकाओं के बीच समन्वय पर चर्चा हुई जिसके तदनन्तर प्रस्तुत की गयी सिफारिषें निम्नवत् हैं–

  (1) वृद्धों तथा सेवानिवृत्तों की देखभाल एवं कल्याण के लिए राश्ट्रीय स्तर पर एक योजना बनायी जाय क्योंकि उन्हें दी जाने वाली पेंषन पर्याप्त नहीं है।

  (2) वृद्धों व सेवानिवृत्तों जिनकी आय का कोई स्त्रोत नहीं है, के लिए गाँवों और षहरों में होस्टल्स तथा अवकाष सदनों की व्यवस्था की जाय।

  (3) केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड तथा स्वैच्छिक संगठनों व अभिकरणों द्वारा संचालित विभिन्न कल्याण कार्यक्रमों में वृद्धों व सेवानिवृत्तों की सेवाओं का परिजनों द्वारा भरपूर उपयोग किया जाय।

  (4) सेवानिवृत्तों/वृद्धों के प्रति सामाजिक एवं पारिवारिक दायित्व की भावना को महत्व प्रदान करने के लिए जन जागरण अभियानों के द्वारा जन चेतना तथा जागरूकता उत्पन्न करनी चाहिए कि उन्हें 'परिवार' बोझ न समझें।

उक्त सिफारिषों के सन्दर्भ में आम राय यह थी कि इन्हें अकेले सरकार लागू नहीं कर सकती क्यों कि एक ओर तो समस्याएं अत्यन्त विशम और जटिल हैं; और दूसरी ओर वृद्धजनों व सेवानिवृत्तों के प्रति हमारे कुछ सामाजिक दायित्व भी हैं। इनके मध्य और अधिक समन्वय स्थापित करके केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड दिल्ली द्वारा अपनी परम्परागत भूमिका को प्रभावषाली ढंग से निभाने पर बल दिया गया। सभी इस बारे में एक मत थे कि समाज कल्याण विभाग सामाजिक परिवर्तन में उत्प्रेरक की भूमिका निभाये। यह भी स्वीकार किया गया कि स्वैच्छिक संस्थाओं में सेवानिवृत्तों/ वृद्धों के विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के लिए जन सहयोग, सहभागिता/भागीदारी प्राप्त करने की क्षमता है। इस प्रकार स्वैच्छिक समाज कार्य के लिए एक प्रबल आन्दोलन की उन्नति उन सभी पर निर्भर करती है जो हमारे विकास कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन में अधिक रूचि रखते हैं।

- **दाभाड़े सुरभि[17] (षिक्षित सेवानिवृत्त महिलाएं– एक सर्वेक्षण; 1997:9)** ने अपने 100 सरकारी सेवानिवृत्त महिला न्यादर्षों के एक आनुभविक अध्ययन के आधार पर पाया कि–

  (1) सेवा निवृत्त हो जाने पर महिलाएं विषेशतः वृद्ध; परिवारों में सामंजस्य एवं समन्वय स्थापित करने में असफल महसूस करती हैं क्योंकि वे स्वेच्छाचारी जीवनयापन करने में अधिक विष्वास करती हैं; बहुओं तथा बेटों के बन्धन में रहना नहीं चाहती हैं।

  (2) पेंषन के अतिरिक्त आमदनी का कोई अन्य स्त्रोत नहीं पाया गया है; तथा अध्ययन की गयी 71.15 प्रतिषत निदर्षित सूचनादाताएं पेंषन से ही अपनी गुजर बसर करती हैं।

  (3) घरेलू तनावों से बचने के लिए वे स्वतंत्र रूप से घूमने फिरने एवं तीर्थ करने में विष्वास करती हैं, ग्रीश्मावकाष के दिनों में वे प्रायः बाहर भ्रमण करने चली जाती हैं।

  (4) अधिकांषतः वृद्धाएं अपनी पेंषन को परिवार पर व्यय न करके अपने ऊपर ही व्यय करती हैं अतः इनके 48 प्रतिषत परिवारों में छोटी–छोटी बातों पर पारिवारिक तनाव देखने को मिले हैं।

  (5) भले ही सेवानिवृत्त वृद्धाएं स्वयं अनुषासित रहकर, परिजनों को अपने अनुषासन में रखना पसन्द करती हैं; जिसमें 90.5 प्रतिषत निदर्षित असफल पायी गयी हैं।

  (6) सेवानिवृत्त महिलाएं; घर गृहस्थी से बाहरी सामाजिक कार्यों में अपेक्षाकृत अधिक रूचि लेती हैं, घरेलू कार्यों में नहीं।

  (7) सर्वेक्षितों में से 80 प्रतिषत ने यह स्वीकार किया कि वे घर के रखरखाव व साज सज्जा में अत्यन्त अधिक रूचि लेती हैं, परिजनों द्वारा उनके अनुरूप कार्य न करने, उनकी बातें न मानने पर वे झुंझलाहट व तनावयुक्त पायी गयी हैं।

इन आनुभविक अध्ययनों के तथ्यों के प्रकाष में स्पश्ट है कि षिक्षित सेवानिवृत्त महिलाएं पारिवारिक सामंजस्य व समायोजन करने में असफल रहती हैं क्यों कि वे वृद्धावस्था में स्वभावतः चिडचिढी हो जाती हैं; तथा अपने अनुरूप ही कार्य कराना पसन्द करती हैं जो वर्तमान परिप्रेक्ष्यों में कम सम्भव है या फिर सम्भव ही नहीं है। क्योंकि एकल परिवारों की धारणा इसमें सबसे बड़ा अवरोध है।

- **ळवमस ैण्ञ्ञण – ज्ञंतवसम व्न्च्[18] ;1997द्ध** ीं ेजंजमक जींज ष्ंहमष् पे ंद पउचवतजंदज बिजवत जींज कमजमतउपदमे जीम कमचमदकमदबल विं चमतेवदण् जेवनही सपमि मगचंबजंदबल ीं हवदम ंइवअम 55 लमंते पद प्दकपंय पद तनतंस ंतमेंए जीपे पे जीम ंहम तिवउ ूीमतम जीम ंहमक मिमस दमहसमबजमक ंदक नदबंतमकण् डवतम जींद ींसि वि जीम ेमदपवत बपजप्रमदे ूीमतम जीम ेजनकल ूें बवदकनबजमकए ूें ंइवअम 60 लमंते विं हमए ंदक वि जीपे ं उंरवतपजल ूमतम वि मिउंसमेण् जेम चतवइसमउे बिमक इल जीम ंहमपदह इम पदकपबंजमक ें इमसवू रू

म्बवदवउपब → प्दबवउम कमपिबपमदजल ंदक सवे वि मिउचसवलउमदज

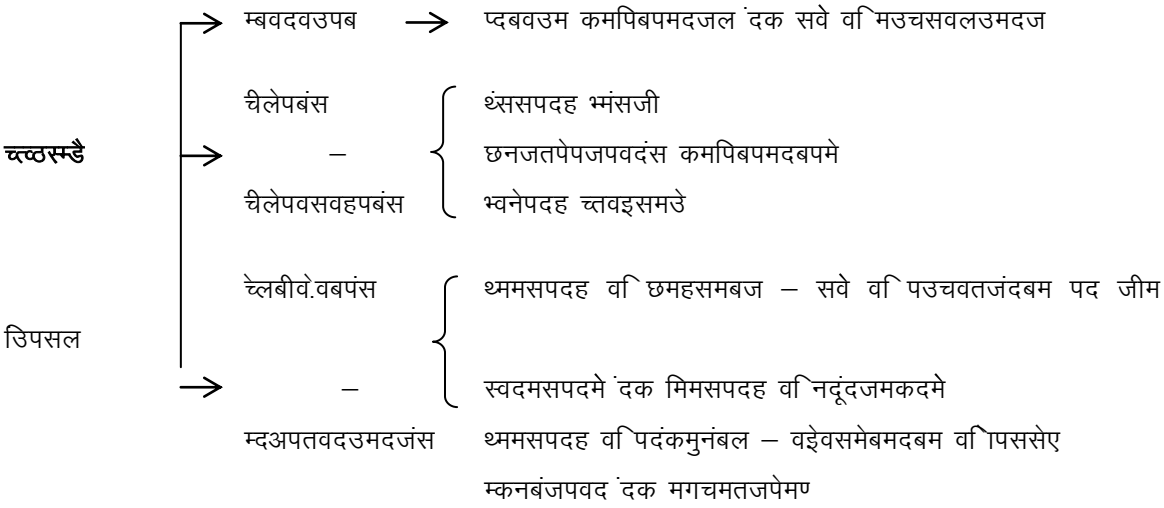

चव्ठस्म्डै →
चीलेपबंस – चीलेपवसवहपबंस { थ्ंससपदह भ्मंसजी / छनजतपेपजपवदंस कमपिबपमदबपमे / भ्वनेपदह च्तवइसमउे

िंउपसल →
च्ेलबीव.ेवबपंस – म्दअपतवदउमदजंस { थ्ममसपदह वि छमहसमबज – सवे वि पउचवतजंदबम पद जीम / स्वदमसपदमे ंदक मिमसपदह वि नदूंदजमकदमे / थ्ममसपदह वि पदंकमुनंबल – वइेवसमेबमदबम वि ापससेए / म्कनबंजपवद ंदक मगचमतजपेमण

प्द अपमू वि जीम पदबतमेंम पद जीम चवचनसंजपवद वि जीम ंहमक ंदक उवनदजपदह मगचमदकपजनतम वद जीमपत ूमसंतिमय पज पे ंसस जीम उवतम दमबमेंतल जींज जीम ंहमक पदअवसअम जीमउेमसअमे पद अवसनदजंतल ेमतअपबमे वित जीम कमअमसवचउमदज वि जीम दंजपवदण् प्ज ूवनसक इम पद जीम पदजमतमेज वि जीम ंहमक जीमउेमसअमे जव पदअवसअम जीमउ पद ं अवसनदजंतल ेमतअपबम उवकम जव पिससज जीमपत जपउम हंपदनिससल – ंततमेज ूतपजपदह विं वि जीमपत ेापससेए बंचंबपजपमे – मगचमतपमदबमण् ज्व चनज पद ं दनजीमससए जीमतम पे ं दममक जव पदजमहतंजमक जीम ंहमक पदजव जीमपत िंउपसलय ंदक जव उंाम जीमउ ूंदजमक – ंबबमचजमक पद जीम िंउपसल ंदक पद जीम ेवबपमजल ें ूमससण

- **राजौरिया सीमा[19] (1998)** ने अनुसूचित जातियों की 50 वृद्ध महिलाओं का गहन सर्वेक्षण करके उनकी स्वास्थ्य समस्याओं पर आनुभविक अध्ययनोपरान्त संक्षिप्त प्रकाष डालते हुए लिखा है कि– (1) अनुसूचित जातियों की षत प्रतिषत वयोवृद्धाएं अषिक्षित हैं अतः वे अपने स्वास्थ्यों तथा रखरखाव के प्रति अत्यन्त उदासीन पायी गयी हैं (2) 90.5 प्रतिषत सर्वेक्षित वयोवृद्धाओं के स्वास्थ्य उम्र के साथ–साथ खराब होने के कारण विभिन्न रोगों/बीमारियों (यथाः क्षयरोग, दमा रोग, दृश्टिहीनता, लिकूरिया, कमर झुकना, चर्म रोगों, जोडों व हड्डियों में दर्द, गठिया, लकवा, सुगर की बीमारी, अन्धता आदि) की षिकार पायी गयी हैं (3) बीमार होने पर भी वे परहेज नहीं करती अपितु उदासीनता

बरतती हैं तथा कहती हैं कि हमें अब क्या करना? (4) 48 प्रतिषत सर्वेक्षित स्वास्थ्य के प्रति घोर लापरबाह पायी गयी हैं जो खाने में अच्छा लगता है, खा लेती हैं, (5) प्रायः वयोवृद्धाएं कहती पायी गयी हैं कि– ''सब कुछ देख लिया; भगवान, अब तौ उठा ले।'' अर्थात् वे अब और अधिक कश्टमय जीवन व्यतीत करना नहीं चाहती।

- **रीनमैन[20] (1954:370) ने स्पष्ट किया है कि** एक सेवानिवृत्ति व्यक्ति, वृद्धावस्था में किस प्रकार समायोजन करता है, यह उसके पूर्व के अनुभवों पर निर्भर करता है; साथ ही यदि परिवार व समाज का व्यक्ति के प्रति सहयोगी रूख है तो वह समाज में आसानी से समायोजन कर लेता है। वर्तमान समय के बदलते सामाजिक मूल्यों, आधुनिकता और अत्यधिक व्यस्त सामाजिक जीवन के कारण तमाम वृद्ध अपनों के होते हुए भी स्वयं को असहाय, बेसहारा व बेचारा महसूस करते हैं। वास्तव में जिस गति से वृद्ध नागरिकों की संख्या में वृद्धि हो रही है, उससे ऐसा प्रतीत होता है कि भविष्य में इनकी समस्यायें और भी अधिक जटिल होती जायेंगी।
- **त्रिपाठी राजमणि[21] (1999:35–39)** ने विष्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी एक ताजा रिपोर्ट का उल्लेख करते हुए लिखा है कि आज विष्व में वृद्ध नागरिकों की संख्या लगभग 58 करोड़ से अधिक है; इनमें से लगभग 35 करोड़ से अधिक व्यक्ति भारत व अन्य विकासषील देषों में निवास करते हैं। अनुमान है कि सन् 2021 तक विष्व में वृद्धजनों की संख्या बढ़कर 100 करोड़ तक; और विकासषील देषों में यह जनसंख्या 70 करोड़ तक पहुॅच जायेगी। यहॉ पर वृद्धजनों से तात्पर्य 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों से है जिसमें सेवानिवृत्त सीनियर सिटीजन्स भी सम्मिलित हैं। विष्व की इस गम्भीर स्थिति की तुलना में भारत की स्थिति तो और भी अधिक गम्भीर है। इसका कारण यह है कि हमारे यहॉ जनसंख्या वृद्धि की समस्या है; तथा चिकित्सीय व स्वास्थ्य सुविधाओं में प्रगति वॉच्छित नहीं हुई है; इसलिए सेवानिवृत्तों तथा वृद्धों की समस्याएं निरन्तर बढ़ती ही जा रही हैं।
- **गोल्ड फर्थ[22] (1955) ने लिखा है कि** ''प्रतिकूल सामाजिक और व्यक्तिगत अनुभवों से पैदा होने वाले अहम्, सम्प्रत्यय, कुण्ठा, आकुलता, रोष आदि असहायता की भावना को जन्म देते हैं। फिर इनसे दूसरों के साथ कलह और व्यक्तिगत जीवन में अप्रसन्नता तथा नैरास्य की उत्पत्ति होती है; और ये दोनों ही प्रकार के वृद्ध सामान्य व सेवानिवृत्त को उनके जीवन के ढांचे में होने वाले परिवर्तनों से समायोजन करने में इतना अधिक असमर्थ बना देते हैं कि वे फिर पग

पग पर विभिन्न प्रकार की पारिवारिक तथा सामाजिक समस्याओं की अनुभूतियॉ करते हैं कि फिर समायोजन नहीं कर पाते।''

- **पाष्चात्य विद्वान कूटनर[23] (1956) ने सेवानिवृत्ति के प्रसंग में अपने अध्ययन के आधार पर लिखा है कि** 65 से 69 वर्ष के मध्य की आयु में व्यक्ति के सामाजिक सम्बन्धों में काफी कमी आ जाती है।
- **फायर्ड[24] (1986)** ने अपने आनुभविक अध्ययन के आधार पर कहा है कि जो असफल व्यक्ति अपनी जिद के कारण कार्यषील जीवन से जुड़े रहते हैं, प्रथमतः तो यह दिखाना चाहते हैं कि वे अभी सफलता प्राप्त कर सकते हैं भले ही सेवानिवृत्त हैं, दूसरे विद्वान यह गलत साबित करने का प्रयास करते हैं कि स्वाभाविक तौर पर सेवानिवृत्त वृद्धों की ऊर्जा में कमी आ जाती है जो उनके आत्म–सम्मान को चोट पहुॅचाती है अस्तु अधिक चिन्तित रहते हैं कि उनके जीवन के अनुभवों का लाभ परिजन नहीं लेते।
- **क्रोटेड[25] (1969)** ने अपने आनुभविक अध्ययन के आधार पर लिखा है कि 'सेवानिवृत्ति' का किसी व्यक्ति की क्षमता, नैतिक जीवन, आत्मानुषासन, सन्तोष और आषावादिता आदि पर अत्यन्त न्यून प्रभाव पड़ता है। आपका कहना है कि सेवानिवृत्त व्यक्ति की सन्तुष्टि इस बात पर निर्भर करती है कि उसका सोच, अभिरूचि तथा कार्य कैसा है और व्यक्ति के व्यक्तिगत भूमिकाएं सम्बन्धी कारण कैसे हैं? **फ्रेंक आइण्टजिन[26] (1970:146) के अनुसार** अवकाष–प्राप्ति के पष्चात के विभिन्न वर्षों में नैतिक और सामाजिक कार्यों एवं सम्बन्धों की कमी में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं होता है।

  सुस्पष्ट है कि पाष्चात्य विद्वानों के आनुभविक अध्ययनों में भी विरोधाभास पाया जाता है। यह विरोधाभास स्वाभाविक भी है क्योंकि वहॉ का परिवेष तथा परिस्थितियॉ अलग हैं, और अवकाष प्राप्त (सेवानिवृत्त) व्यक्तियों के अनुभव भी भिन्न–भिन्न होते हैं। कुछ व्यक्ति सेवानिवृत्त जीवन से खुष होते हैं; और कुछ खुष नहीं होते या सन्तुष्ट नहीं होते हैं। यह सन्तुष्टि उनके व्यक्तिगत अनुभवों पर निर्भर करती है, और निष्चित तौर पर सेवानिवृत्त व्यक्ति की समायोजन क्षमता उसके अनुभवों पर निर्भर करती हैं।
- **सिंह भगत[27] (2001:182) के अनुसार** सेवानिवृत्त व्यक्तियों व वृद्ध नागरिकों पर अध्ययन करने की भारत जैसे विकासषील देष में अत्यन्त आवष्यकता है। वर्तमान में हमारे देष में वृद्ध नागरिकों के प्रति नवयुवकों का व्यवहार जानने के लिए किए शोध अध्ययनों से विदित हुआ है कि मध्यम वर्गीय परिवारों के युवकों में वृद्ध नागरिकों के प्रति लगाव, प्रेम

व आदर की भावना आज भी; उच्च व निम्न वर्गों की अपेक्षा अधिक है। दूसरी ओर यह भी पाया गया है कि आज के युवकों के मन में वृद्धों के प्रति बेरूखी की प्रबल भावना होती है, जो प्राचीन भारत के परम्परागत समाज में नहीं थी। यह बेरूखी की भावना उम्र बढ़ने के साथ–साथ कमजोर पड़ती जाती है। अधेड़ उम्र की संतानें आज भी अपने वृद्ध माता–पिता की देखभाल/परिचर्या में अधिक दिलचस्पी लेती हैं। इसका एक मनोवैज्ञानिक कारण यह है कि उन्हें निकट भविष्य में अपना हश्र अपने मॉ–बाप जैसा दिखायी देने लगता है; अतः वे अपने बच्चों के सामने आदर्ष प्रस्तुत करना चाहते हैं; जिससे उन्हें वृद्धावस्था में उपेक्षा का षिकार न होना पड़े। फिर भी आज अधिकांषतः वृद्ध व्यक्तियों को समाज द्वारा उपेक्षा का षिकार होना पड़ रहा है जो गम्भीर चिन्तन का विषय है।

- **सारस्वत सुरेखा[28] (2015)** ''....कल तक वे भी आफिस जाने के लिए सुबह जल्दी–जल्दी तैयार होते थे। उन्हें घर का ढेर सारा काम निबटाना होता था। वे दोस्तों पड़ौसियों के साथ लम्बी–लम्बी गप्पें हॉका करते थे; उन्हें लगता था कि उनके आसपास सारा कुछ ज्यों का त्यों रहेगा; आजीवन। अपने आसपास की दुनियॉ का केन्द्र वे बने रहेंगे, हमेषा–हमेषा के लिए; पर ऐसा भला होता कहॉ है? समय का पहिया कभी नहीं रूकता; और देखते ही देखते सेवानिवृत्त होते ही सारी दुनियॉ बदल गयी है; दिनचर्या, परिजन, पास, पड़ौसी, रिष्तेदार। रौब रूतबा भी कम हो गया है, लोग कहते हैं कि क्या रिटायर हो गए हो? कितनी पेंषन मिलती है।.... बेटी बेटा बहू को अपने से ही फुरसत नहीं है; हरेक की अपनी व्यस्तताएं हैं। पोते पोतियॉ जब दादाजी दादीजी और नाना नानी कहते, उनके आसपास हॅसते–खिलखिलाते धमा चौकड़ी मचाते हैं; तब जाकर कहीं उनमें उस जीवन का संचार हो पाता है जो कुछ समय पूर्व (सेवानिवृत्ति से पहले) था। पीछे छूट गए तमाम वर्श और घटनाएं। सहसा अपनी याद दिला जाती हैं।'' (मनोहर कहानियॉ; से लिया गया अंष)
- **पर्वथम्मा एस[29] (2015)** ने अपने आनुभविक अध्ययन ''सेवानिवृत्तों की समस्याएं'' को अध्ययन करने के लिए निम्न परिकल्पनाएं निर्मित कर तार्किक निश्कर्ष स्थापित किए। कुछ प्रमुख परिकल्पनायें निम्नवत् स्थापित की हैं– (1) आधुनिक परिवर्तनों के कारण सेवानिवृत्त उपेक्षा के षिकार हो रहे हैं, (2) सेवानिवृत्तों को परिजन, परिवार पर भार समझकर उनके साथ उपेक्षापूर्ण व्यवहार करते हैं तथा उनसे छुटकारा पाना चाहते हैं, (3)

सेवानिवृत्तों के अनुभवों का लाभ; परिजन नहीं लेते, (4) सेवानिवृत्त व्यक्तियों में चिड़चिड़ापन, आलस्य, एकान्तप्रियता तथा निराषा आ जाती है, (5) सेवानिवृत्तों में उम्र ढलने के साथ–साथ षारीरिक तथा मानसिक परिवर्तन तथा उनके मन में चिन्ता का सिलसिला षुरू हो जाता है, (6) सेवानिवृत्त, सामाजिक पारिवारिक जीवन में दबाव तथा स्वयं को उपेक्षित अनुभव करते हैं, (7) आधुनिक भौतिकतावादी संस्कृति तथा तेजी से बदलता सामाजिक पर्यावरण सेवानिवृत्तों के लिए समस्याएं जनित कर रहे हैं, (8) सेवानिवृत्त पेंषन भोगियों की तुलना में, सामान्य वरिश्ठ नागरिकों की समस्याएं अपेक्षाकृत अधिक होती हैं, (9) सेवानिवृत्तों की सुख षान्ति तथा उनके अनुभवों का लाभ लेने के लिए परिवार में उनका समन्वय आवष्यक है, (10) प्रायः सेवानिवृत्त समय–समय पर परिजनों से श्रेश्ठ (अनुभवों) परिचर्या की आकॉक्षाएं रखते हैं, तथा (11) सेवानिवृत्ति के पष्चात् प्रायः व्यक्ति निराषावादी, बेचैन तथा चिन्तित प्रकृति के हो जाते हैं।

उपरोक्त समस्त आनुभविक अध्ययनों के निश्कर्शों के सिंहावलोकन करने से अनुसंधित्सु को अपने अनुसन्धान अध्ययन के सम्बन्ध में सामान्य ज्ञान तथा ज्ञान बोध विकसित हुआ है; साथ ही भ्रमात्मक व सन्देहात्मक स्थितियाँ स्पश्ट हुयी हैं। यद्यपि प्रस्तुत षोध समस्या पर लिखित साहित्य का नितान्त अभाव पाया गया है; फिर भी जो षोध सम्बन्धित साहित्य उपलब्ध हुआ है; उससे अनुसन्धान कार्य के लिए एक दिषा अवष्य मिली है।

KKKKKK

## सन्दर्भ–सूची


1. बेसिन एच.एफ. ; (1962) व्यवहारिक विज्ञानों में साहित्य समीक्षाएं, मैक मिलन मद्रास, पृश्ठ–40
2. बोर्ग जी.पी. ; (1963) सामाजिक विज्ञानों के अनुसंधानों में साहित्य समीक्षाएं, बॉम्बे, पृश्ठ 48
3. सिंह पुरूषोत्तम ; (1991) अनुसंधान के मूल तत्व, सरस्वती प्रकाषन, दरभंगा (बिहार), पृ. 110
4. सिंह एस.पी. ; (1975) इण्टररिलेसन्स इन ऐन ऑर्गना– इजेषन, आलोक प्रकाषन जयपुर, पृश्ठ 14

5. स्टाउफर सेम्युअल ; (1962) रिव्यु : ए मेजर स्टैप ऑफ इन्वैस्टीगेषन; अमेरिकन सोसियो– लॉजिकल रिव्यु अंक–23, पृ. 73

6. सिंह बी.एस ; (2001) वृद्धावस्था का निर्धारण, प्रकाषित षोध पत्र 'सामाजिक सहयोग' राश्ट्रीय षोध पत्रिका, उज्जैन (म0प्र0) अंक 32, पृश्ठ 21–26

7. ..... ; (1989) राश्ट्रीय निदर्षन सर्वेक्षण संगठन (भारत), चक्र–42, 1989,नई दिल्ली

8. पचौरी जे.पी ; (1992) वृद्धावस्थाः एक विवेचन, 'समाज कल्याण पत्रिका', केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड, नई दिल्ली, अंक–7, फरवरी, पृश्ठ 20–37

9. सिंह एस.डी ; (1995) वृद्धजनः सामान्य एवं सेवानिवृत्त– एक समाजषास्त्रीय अध्ययन 'जन सहयोग' पत्रिका, साहिबाबाद, दिल्ली, पृश्ठ 7–13

10. सिलाबट सुधा एस ; (1995) सेवानिवृत्तों की समस्याएं, प्रकाषित षोधपत्र 'सामाजिक सहयोग', श्रीकृश्ण षोध संस्थान, उज्जैन (म0प्र0), अंक–26, पृश्ठ 11–17

11. गोयल सुनील व करोले ओ.पी. ; (1997) द प्रॉबलम्स ऑफ ट्राइवल एज्डः नीड टू इन्टीगेट दैम इन्टू फैमिली, प्रकाषित षोधपत्र, राश्ट्रीय षोध पत्रिका 'सामाजिक सहयोग' श्रीकृश्ण षोध संस्थान, उज्जैन (म0प्र0), अंक जनवरी मार्च, 1997, 28(40–45)

12. रानी वन्दना ; (1999) वृद्धों की पारिवारिक स्थिति, प्रकाषित षोध पत्र, सामाजिक विज्ञानों की षोध पत्रिका 'राधाकमल मुकर्जी चिन्तन परम्परा', सामाजिक विज्ञान विकास संस्थान, चान्दपुर स्याऊ (बिजनौर) उ0प्र0, वर्श–1, अंक–1, पृश्ठ–67

13. ..... ; (1977) इन्स्टीट्यूट ऑफ सोसल वर्क, नई दिल्ली (सर्वे रिपोर्ट), वृद्धजनों की समस्याएं, पृश्ठ–124

14. अग्रवाल दामोदर ; (1998) वृद्धजनों के मनोरंजन में दूरदर्षन की भूमिका, प्रकाषित षोधपत्र, राश्ट्रीय षोध संगोश्ठी, ए0के0 कालेज, षिकोहाबाद, 3 जनवरी 1998, पृश्ठ 25–30

15. भट्टाचार्य बी.एन ; (1982) वृद्धजनों के प्रति दृश्टिकोण 'समाज कल्याण' पत्रिका, केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड, नई दिल्ली, पृश्ठ 34

16. ..... ; (1982) वृद्धजनः सरकारी प्रयास एवं स्वैच्छिक संगठनों की भूमिकाएं 'समाज कल्याण' पत्रिका, केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड, नई दिल्ली, पृश्ठ– 11–16

17. दाभाड़े सुरभि ; (1997) षिक्षित सेवानिवृत्त महिलाएंः एक अध्ययन, समाज विज्ञान संकाय वार्शिक पत्रिका, औरंगाबाद विष्वविद्यालय, औरंगाबाद, 1997, पृश्ठ 9–14

18. गोयल सुनील के. व कोरेले ओ.पी. ; (1997) द प्रॉब्लम्स ऑफ ऐजिंग : ए सोषल सर्वे, प्रकाषित षोधपत्र, राश्ट्रीय षोध पत्रिका 'सामाजिक सहयोग', श्रीकृश्ण षोध संस्थान, उज्जैन (म0प्र0), 1997, अंक–28, पृश्ठ–43

19. राजौरिया सीमा ; (1998) वृद्धजनों की स्वास्थ्य समस्याएंः एक अध्ययन, दयालवाग, डीम्ड विष्व– विद्यालय, आगरा, पृश्ठ 107–113

20. रीनमैन डी. ; (1954) सम क्लीनिकल एण्ड कल्चरल आसपैक्ट्स ऑफ एजिंग, अमेरिकन जर्नल ऑफ सोषियोलॉजी, पृ. 379

21. त्रिपाठी राजमणि ; (1999) वृद्ध नागरिकों की बढ़ती जनसंख्या और उनकी देखभाल की समस्या, ''कुरूक्षेत्र'' सितम्बर, पृश्ठ 35–39

22. गोल्ड फर्ब ए.आई. ; (1955) साइकोथैरेपी विद एज्ड परसन्स– पैटर्न आफ एडजस्टमेंट इन ए होम फॉर द एज्ड, मैक मिलन कम्पनी न्यूयार्क, पृश्ठ 608

23. कूटनर बर्नार्ड ; (1956) प्रॉब्लम्स ऑफ ऐडजस्टमेण्ट ऑफ रिटाइर्ड्स, रसल सेज, (प्रा.लिमि.) न्यूयार्क, पृश्ठ 89

24. फायर्ड एडिडा ग्रुप्स ; (1986) टुबार्ड्स ऐक्टिविटी एण्ड इनएक्टिविटी, जे0 जरोनटोल, हाल्ट, न्यूयार्क, पृश्ठ–141

25. क्रोटेड फ्रेड एण्ड रॉबर्ट सी.एच.ली. ; (1969) वूमेन इन रिटायरमेंट– ए प्रिलिमिनरी रिपोर्ट, ऑक्सफोर्ड औचियो, स्क्रिपर्स फाउन्डेषन फॉर रिसर्च इन पॉपूलेषन प्राब्लम, पृश्ठ 113

26. आइंटजिन फ्रेंक ; (1970) सोषल रिलेसन्स, यू.एस.ए.; अमेरिकन जर्नल ऑफ सोषियोलॉजी, पृश्ठ–146

27. सिंह भगत ; (1999) वृद्धजनों की समस्याएं, प्रकाषित शोध पत्रः ''सामाजिक सहयोग'' त्रैमासिक राष्ट्रीय शोध पत्रिका, उज्जैन (म.प्र.), पृश्ठ 30

28. सारस्वत सुरेखा ; (2015) 'एक सेवानिवृत्त', मनोहर कहानियॉः एक सत्य, प्रकाषित जीवन का एक अंष, जनवरी 2015, पृश्ठ 31–40

29. पर्वथम्मा एस.सी ; (2015) सेवानिवृत्तों की समस्याएं, प्रकाषित षोध पत्र, राश्ट्रीय षोध पत्रिका 'समाज समीक्षा', समाज प्रकाषन, अंधेरी बॉम्बे, अंक–7, (20–26)


KKKKKK